प्रसार पुस्तिका – 04/2026

सरसों की वैज्ञानिक खेती

आलेख

डॉ. मुनेश्वर प्रसाद
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

ई. जीतेन्द्र कुमार
विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियंत्रण)

सुश्री वर्षा कुमारी
विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान)

कृषि विज्ञान केन्द्र, गंधार, जहानाबाद
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

भाकृअनुप
ICAR

सरसों की वैज्ञानिक खेती

सरसों भारत की रबी मौसम का प्रमुख तिलहन फसल है। सरसों और रेपसीड को आम तौर पर राई और तोरिया कहा जाता है। पूरे उतर भारत में इसके बीज का उपयोग अचार, मसाला, मानव उपभोग के लिए तेल का उपयोग खाना पकाने और तलने में किया जाता है। इसके खल्ली का उपयोग पशुओं के चारे और खाद के रूप में किया जाता है। हरे तने और पत्तियाँ मवेशियों के लिए हरे चारे का अच्छा स्रोत है। युवा पौधों की पत्तियों का उपयोग हरी सब्जियों/साग के रूप में किया जाता है, वे आहार में पर्याप्त सल्फर और खनिज प्रदान करते हैं। यह फसल उपोष्ण कटिबंधीय और उष्ण कटिबंधीय दोनों जलवायुवीय दशाओं में उगाया जाता है। बिहार में तोरिया, पीली सरसों और राई की खेती मुख्य रूप से की जाती है।

मिट्टीः सरसो का खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टी जैसे बलुई दोमट से लेकर चिकनी दोमट मिट्टी तक में की जा सकती है, लेकिन वे हल्की दोमट मिट्टी पर सबसे अच्छी तरह उगायी जाती है ।

खेत की तैयारीः खेत की तैयारी के लिए 2–3 जुताई के बाद पाटा से खेत को समतल करना लाभप्रद होता है। खरीफ में ढ़ैचा (हरी खाद) का 50–60 किलोग्राम बीज प्रति हे. की दर से छिड़काव कर बुआई करें। जब ढ़ैचा 40–50 दिन का हो जाए तो मिट्टी पलटने वाले हल से मिट्टी में मिला दे अैर दो महीने सड़ने दें। इसके पश्चात् उस खेत में सरसों की बुआई करने पर सरसों में 30–50 प्रतिशत अधिक पैदावार होती है। हरी खाद प्रत्येक 3 वर्ष के अंतरल पर प्रयोग करना चाहिए।

बीज दरः शुष्क क्षेत्रों में 4–5 किलोग्राम तथा सिंचित क्षेत्रों में 2.5–3 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। बुआई के लिए प्रमाणित बीज का प्रयोग करना चाहिए।

बीज उपचारः बीज को बीज जनित रोग से बचाने के लिए फफूंदनाशकों से बीजोपचार करना जरूरी है। बुआई से पहले बीजों को कार्बेंडाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. फफूंदनाशक 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर बुआई करना चाहिए।

भारतीय राई की अनुशंसित प्रभेद

उन्नत प्रभेद	बुआई का समय	परिपक्वता अवधि (दिनों में)	औसत उपज (क्वि/हे.)	तेल की मात्रा (प्रतिशत में)
डी.आर.एम.आर 150–35	15 नवम्बर से 10 दिसम्बर	112–115	18–20	39.80
एन.आर.सी.एच. बी. 101	15 नवम्बर से 10 दिसम्बर	105–115	13.8–14.9	35.42

उन्नत प्रभेद	बुआई का समय	परिपक्वता अवधि (दिनों में)	औसत उपज (क्वि./हे.)	तेल की मात्रा (प्रतिशत में)
राजेन्द्र सुफलाम	15 नवम्बर से 25 दिसम्बर	105–115	12–15	40
क्रांति	15 अक्टूबर से 25 नवम्बर	125–130	20–22	40
बी.पी.एम–11	15 नवंबर से 15 दिसंबर	120–125	15–18	37.8
बी.पी.एम–172	15 से 25 अक्टूबर	125–130	20–22	41

उन्नत प्रभेदः तोरिया

उन्नत प्रभेद	बुआई का समय	परिपक्वता अवधि (दिनों में)	औसत उपज (क्वि./हे.)	तेल की मात्रा (प्रतिशत में)
आर.ए.यू.टी.एस.17	25 सितंबर से 10 अक्टूबर	90–95	12–15	43
पांचाली	25 सितंबर से 10 अक्टूबर	95–105	10–12	40
पी.टी.303	25 सितंबर से 10 अक्टूबर	95–100	12–14	43
भवानी	25 सितंबर से 10 अक्टूबर	90–95	10–12	41

उन्नत प्रभेदः पीली सरसों

उन्नत प्रभेद	बुआई का समय	परिपक्वता अवधि (दिनों में)	औसत उपज (क्वि./हे.)	तेल की मात्रा (प्रतिशत में)
66–197–3	10–20 अक्टूबर	120–125	14–16	43
राजेन्द्र सरसों 1	10–20 अक्टूबर	95–100	15–16	46
स्वर्णा	10–20 अक्टूबर	110–120	14–16	47
पीतांबरी	10–20 अक्टूबर	110–115	14–17	48
पंत श्वेता	10–20 अक्टूबर	105–110	16–17	45
सी.आर.सी.वाई.एस. 05–02	10–20 अक्टूबर	115–118	13–19	46

बुआई की दूरी: बीज को पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 सेमी., पौधे से पौधे की दूरी 10–15 सेमी में बुआई करना चाहिए। बीज की बुआई शुन्य जुताई मशीन से 45 X15 सेमी. की दूरी पर करना बेहतर रहता है।

बीज की मात्रा व उपचार: तोरिया, राई एवं पीली सरसों के बीज शुद्ध प्रमाणित व रोगमुक्त होना चाहिए। बुआई के लिए उन्नत किस्मों का 5 किग्रा. बीज प्रति हे. की दर से प्रयोग करना चाहिए। बुआई के पूर्व बीज को कार्बेंडाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू. पी. फफूंदनाशी 2 ग्राम प्रति किग्रा. बीज या ट्राइकोडर्मा 10 ग्राम की दर से उपचारित करना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन: सिंचित फसल के लिए 2.5 टन कंपोस्ट खाद प्रति हेक्टेयर की दर से अंतिम जुताई से पहले खेत में मिला देना चाहिए। सिंचित अवस्था के लिए 80 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश एवं 40 किग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। सिंचित अवस्था में नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश पूरी मात्रा में बुआई के समय प्रयोग करना चाहिए। नेत्रजन की शेष आधी मात्रा फूल लगने के समय उपरिनिवेशन करें। जबकि असिंचित अवस्था में नत्रजन, फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करना चाहिए। जिंक की कमी वाले खेत में 25 किलोग्राम, जिंक सल्फेट एवं बोरेक्स 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की तैयारी के समय डालें।

सिंचाई: अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए मिट्टी में पर्याप्त नमी मौजूद होनी चाहिए। सिंचित अवस्था में दो सिंचाई करनी चाहिए। पहली सिंचाई फूल आने से पहले तथा दूसरी सिंचाई फलियां लगने के समय।

निकाई–गुड़ाई एवं खरपतवार प्रबंधन: बुआई के 10–15 दिनों के अंदर अतिरिक्त पौधों की बछनी करें एवं बुआई के 20 दिनों बाद निकाई–गुड़ाई करें। रसायनिक विधि से खरपतवारों के रोकथाम हेतु पेंडीमिथालिन 30 ई.सी. 3 लीटर मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई के तुरंत बाद 500–600 लीटर पानी में घोलकर मिट्टी पर छिड़काव करना चाहिए।

कटाई, दौनी एवं भंडारण: जब 75 प्रतिशत फलियाँ सुनहरी रंग की हो जाए, उस समय फसल की कटाई कर उसे सुखा लेना चाहिए। इसके बाद बीज को अलग कर लें। देर से कटाई करने पर बीज झड़ने की संभावना रहती है, बीजों को 3–4 दिन तक धूप में सुखाकर 9% से कम नमी पर टिन या मिट्टी के बरत्तनों या सीडबीन में भंडारित करना चाहिए।

प्रकाशक

डा. मुनेश्वर प्रसाद
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

कृषि विज्ञान केन्द्र, गंधार, जहानाबाद
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर